<u>संगोष्ठी रिपोर्ट</u>

नेपाल में गहराता राजनैतिक संकट एवं भारत

पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज

गोरक्षपीठाधीश्वर एवं सदर सांसद गोरखपुर, लोकसभा

(14 फरवरी 2015 को महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय जंगल धूसड़, गोरखपुर में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी ''21 वीं शताब्दी में भारत-नेपाल सम्बन्ध चुनौतियाँ एवं विकल्प'' के उद्घाटन सत्र में दिये गये उद्बोधन के आधार पर)

वर्तमान भारत की उत्तर-पूर्वी सीमा से सटा हुआ हमारा सहोदर देश नेपाल युगो से भारतीय भू-सांस्कृतिक क्षेत्र का ही एक अभिन्न हिस्सा रहा है। भारत और नेपाल का सामाजिक सांस्कृतिक सम्बन्ध इतना घनिष्ठ है कि भारतीय संस्कृति से इतर, नेपाल की संस्कृति के मूल बीज को खोजा जाना सम्भव नहीं है। भारत को जब भौगोलिक दृष्टिकोण से आर्यावर्त संज्ञा से सम्बोधित किया जाता था, तब भी नेपाल भारत का ही अभिन्न अंग था। भारत तथा नेपाल का सम्बन्ध भूगोल इतिहास, संस्कृति, परंपरा, रीति-रिवाज, धर्म, सामाजिक संरचना आदि सभी दृष्टि से संस्कृति के उषा काल से ही सौहार्द्रपूर्ण रहे है। शिवावतारी महायोगी गुरू श्री गोरक्षनाथ के कृपा एवं आशीर्वाद से ही पृथ्वीनारायण शाह ने आधुनिक काल में नेपाल का एकीकरण किया था।

राजशाही के काल खंड तक नेपाल की राजनीति में गतिशीलता एवं स्थायित्व का दर्शन होता है, किन्तु वर्तमान समय में नेपाल एक गहरे राजनीतिक संकट के भँवर जाल में फंसा हुआ है। 1990 के बाद से जब से नेपाल में राजतंत्र के साथ-साथ बहुदलीय प्रजातांत्रिक व्यवस्था लागू हुई, तभी से नेपाली राजनीति अस्थिर होती चली गई। बीच-बीच में जनता द्वारा निर्वाचित बहुदलीय सरकार ने स्थिति को सम्भालने का प्रयास अवश्य किया तथापि स्थिति जस की तस बनी हुई है। वर्तमान समय में नेपाल के समक्ष अपने संविधान निर्माण की चुनौती सबसे अहम है। 2007 से आद्यावाधि तक तकरीबन 8 वर्षो के अंतराल के बाद भी आज तक नेपाल के संविधान का निर्माण अथक प्रयासों के बावजूद भी नहीं हो सका है। एक लोकतांत्रिक व्यवस्था के संचालन के लिए सबसे पहली आवश्यकता संविधान की होती हैं। एक ऐसा संविधान जो सबके अधिकारों की रक्षा करे, हितों का ध्यान रखे, हर वर्ग के प्रतिनिधित्व को सुनिश्चित करे, जो सर्व-समावेशी हो, सभी द्वारा स्वीकृत हो, लेकिन इन 8 वर्षो के अन्तराल के बावजूद नेपाल की संविधान सभा अब भी कुछ बुनियादी सिद्धांतों को लेकर आमराय नहीं बना सकी है। मसलन नेपाल का संघीय ढाँचा कैसा होना चाहिए, भावी सरकार का स्वरूप कैसा हो, न्यायपालिका को कितनी और कैसी स्वतंत्रता दी जाए तथा माओवादियों को किस प्रकार और कितना प्रतिनिधित्व दिया जाए, आदि।

नेपाल के संविधान निर्माण में सबसे बड़ी बाधा माओवादियों का बढ़ता वर्चस्व है। 2008 में हुए चुनाव में नेपाल के संविधान सभा के लिए निर्धारित 600 में से 200 सीटों पर विजय प्राप्त कर माओवादी सत्ता में आए और यही से माओवादियों का उत्पात बढ़ चला। श्री पुष्पकुमार दहल 'प्रचड' प्रधान मंत्री बनते ही सर्वप्रथम भारत के साथ नेपाल के नैसर्गिक एवं प्राचीन सम्बन्धों को दरकिनार करते हुए चीन का दौरा किया। प्रधानमंत्री के रूप में प्रचंड ने भारत विरोधी गतिविधियों को प्रश्रय देना प्रारम्भ किया और यहीं से नेपाल का भारत से मजबूत दुराव प्रारम्भ हुआ। वर्तमान समय में जो भारत विरोधी गतिविधियों का आलम है वो एक क्षण में नहीं अपितु 2008 के बाद से धीरे-धीरे बना है। नेपाल के संविधान के न बन पाने का एक और प्रमुख कारण माओवादियों की दिन प्रतिदिन बढ़ती अनर्गत शर्ते है। एक तरफ जहाँ नेपाली कांग्रेस भौगोलिक और क्षेत्रीय आर्थिक आधार पर राज्यों का निर्माण चाहती है तो वही दूसरी ओर माओवादी जातीय आधार पर राज्यो के निर्माण का मुद्दा बनाकर नेपाल की राजनीति को अस्थिर कर रहें हैं। नेपाल के लोकतांत्रिक स्वरूप को भी लेकर माओवादी अपना हठीला रूख नही छोड़ रहे है। कांग्रेस तथा अन्य नेपाली दल जहाँ भारतीय संसदीय लोकतंत्र और स्वतंत्र न्यायपालिका के पक्षधर हैं, तो माओवादी अमेरिका के तर्ज पर संघीय ढाँचे के पक्षधर है। निर्वाचन प्रणाली को भी लेकर दोनो पक्षो में गहरा मतभेद है। साथ ही साथ माओवादी बिना किसी योग्यता के सेना में सर्वोच्च पदो पर आसीन होना चाहते हैं। इस घोर राजनैतिक अस्थिरता के माहौल में नेपाल का भविष्य क्या होगा, स्पष्ट नहीं है। इन्हीं अस्थिरताओं के कारण नेपाल भी धीरे-धीरे वैश्विक आतंकवाद का एक गढ़ बनता जा रहा है। ऐसी स्थिति में भारत का यह कर्तव्य बनता है कि वह नेपाल के सुरक्षा एवं स्थिरता हेतु उसका सहयोग करे। हमें बिना किसी भेदभाव के नेपाल की सहायता करनी चाहिए। जिस प्रकार से नेपाल में चीन की पैठ बनती जा रही है और भारत विरोधी गतिविधियाँ उत्तरोत्तर बढ़ रही है, ऐसी स्थिति में भारत को पूरी तत्परता के साथ नेपाल के साथ खड़ा होना चाहिए। चीन की ड्रेगन चाल से हिमाचल को सुरक्षित रखना होगा। हिमालय के सुरक्षित रहने का अर्थ होगा भारत का सुरक्षित होना। एक बफर राष्ट्र के रूप में भारत और चीन के मध्य स्थित नेपाल भारत की सुरक्षा की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। स्मरण रहे हिन्दू पहचान से इतर कोई भी प्रयोग नेपाल में सफल साबित नही हो सकता है। पिछले कुछ वर्षो के घटना क्रम तो यही सिद्ध करते है। समय आ गया है जब भारत अपने इस सहोदर राष्ट्र की प्राण-प्रण से न सिर्फ इसकी चिंता करे अपितु उस चिंता के निवारण के उपाय भी प्रस्तुत करे। भारत और नेपाल के सम्बन्ध **<u>शेष पृष्ठ 96 पर</u>**

सम्पादन- **श्री सुबोध कुमार मिश्र, प्रवक्ता-प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, महाराणा प्रताप, पी०जी० कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर**

135	*वैदिक दर्शन के व्याख्याता महर्षि दयानंद सरस्वती का दर्शन: एक मूल्यांकन - अनुभा श्रीवास्तवा - Vol.1, Issue 2*	*851*
136	*फिल्मी परदा नायक प्रधान, छोटा परदा नायिका प्रधान - कौशल त्रिपाठी - Vol.5, Issue 1*	*844*
137	*पाठशोध या पाठालोचन : शोध की महत्वपूर्ण दिशा - डॉ. कन्हैया सिंह - Vol.1, Issue 1*	*842**
138	*दलित विमर्श : स्वानुभूति बनाम सहानुभूति का सवाल - डॉ. निरंजन कुमार -Vol.1, Issue 1*	*841**
139	*Capabilities and Applications of CRM in Retailing - an Overview -Vidhya Pillai - Vol.3, Issue 1*	*833*
140	*Compensation Satisfaction: A Case in Academics - Neha Aggarwal & Dr. Yajulu Medury - Vol.4, Issue 2*	*832*
141	*प्रेम और सौंदर्य के अप्रतिम कवि शमशेर - डॉ. ललित कुमार सिंह - Vol.4, Issue 2*	*829*
142	*कहानीकार अज्ञेय -डॉ. शोभा सत्यदेव एवं निधि सिंह -Vol.3, Issue 1*	*821*
143	*पंकज बिष्ट के लेखन में प्रतिबिंबित उनका परिवेश: एक अवलोकन - अमिता प्रकाश -Vol.3, Issue 1*	*820*
144	*पुत्रिका-प्रसू: (मात्र पुत्रियों वाली) माताओं की बालिका-शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण - डॉ. शोभा गौड़ - Vol.1, Issue 2*	*819*
145	*दीन दयाल शोध संस्थान के शैक्षिक कार्यों का गाँधी जी के शैक्षिक विचारों के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन - डॉ. नरेश चंद्र श्रीवास्तव - Vol.1, Issue 2*	*819*
146	*नारी के शक्ति और सामर्थ्य को प्रतिबिम्बित करता आधुनिक संस्कृत साहित्य - डॉ.कौशल्या- Vol.4, Issue 2*	*814*
147	*भारतीय श्रमण-ब्राह्मण धारा में व्रात्य - प्रोफे. रेखा चतुर्वेदी - Vol.3, Issue 1*	*807*
148	*'आसमान झुक रहा है' उपन्यास में कुमाऊँ के लोक विश्वास - डॉ. प्रभा पन्त एवं घनाक्षी पांडे - Vol.5, Issue 1*	*799*
149	*A Comparative Study of Role Efficacy among Public, Deemed and Private Universities of Rajasthan A. K. Chaudhary & N. Jain -Vol.4, Issue 2*	*793*
150	*इक्कीसवीं सदी की चुनौतियाँ और कविता -डॉ. एस.बी.के.शशि - Vol.3, Issue 2*	*791*
151	*Human Rights and Empowerment of Tribal Women - Sunil Kumar Sinha - Vol.4, Issue 2*	*791*
152	*आधुनिक परिप्रेक्ष्य में वैदिक मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता- डॉ. प्रीती राठौर- Vol.3, Issue 1*	*784*
153	*कबीर काव्य में स्त्री का स्वरूप- डॉ. सुमन- Vol.4, Issue 1*	*779*
154	*शिक्षक प्रशिक्षण में आधुनिक तकनीक के अनुप्रयोग एवं भावी संभावनाएँ -डॉ. सुनीता सिंह एवं कुलदीप सिंह- Vol.5, Issue 1*	*778*
155	*विस्मृत लेखिका : सत्यवती मल्लिक के साहित्य का मूल्यांकन - डॉ. लक्ष्मी देवी - Vol.4, Issue 2*	*777*
156	*अज्ञेय के सम्पूर्ण कृतित्व का विवेचन विश्लेषण समीक्षक - डॉ. राकेश शुक्ल - Vol.4, Issue 2*	*777*
157	*अज्ञेय के लेखन में व्यक्ति स्वातंत्र्य की अवधारणा - डॉ. प्रियदर्शिनी Vol.4, Issue 2*	*775*
158	*An Analysis of Fertility and Mortality in the Minorities of Kanpur City - Dr. G. L. Srivastava, Antara Maity & Dr. Mamta Srivastava -Vol.4, Issue 2*	*773*
159	*निराला के गीतकाव्य पर एक महत्वपूर्ण शोध प्रकाशन - डॉ. राकेश शुक्ल - Vol.1, Issue 2*	*772*
160	*झारखण्ड के हस्तशिल्प उद्योग में जनजातीय महिलाओं की भूमिका - डॉ. नम्रता गौरव- Vol.5, Issue 1*	*768*
161	*उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद से संबद्ध माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की विज्ञान विषय में रुचि तथा शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन - विकास मिश्रा एवं डॉ. शोभा चतुर्वेदी- Vol.5, Issue 1*	*767*
162	*गुजरात के बृजभाषा साहित्य में राष्ट्रीय एकीकरण एवं सांस्कृतिक परिदृश्य का पल्लवन - डॉ. नीरू राजकुमारी - Vol.1, Issue 2*	*766*
163	*उपभोक्ता सशक्तिकरण में सोशल मीडिया की भूमिका: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन - विकास चंद्र- Vol.5, Issue 1*	*754*
164	*वैवाहिक एवं पारिवारिक मूल्यों पर व्यावसायिक शिक्षा का प्रभाव - डॉ. उपासना एवं डॉ. किरण डंगवाल- Vol.4, Issue 1*	*753*

* *Hits of repeated articles should be added (Due to technical reason)*

◆◆◆

पृष्ठ 86 का शेष

भौगोलिक और राजनैतिक कम, भावनात्मक और सांस्कृतिक अधिक हैं। ये दो राष्ट्र दो अलग शरीर जैसे अवश्य है परन्तु इनकी आत्मा एक है और यदि ऐसी स्थिति में किसी भी देश रूपी शरीर के आवरण पर चोट लगेगी तो आत्मा विचलित जरूर होगी। भारत और नेपाल के सामाजिक जीवन में रोटी-बेटी का सम्बन्ध आज भी कायम है। धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक भौगोलिक हर दृष्टिकोण से जुड़े हुए नेपाल और भारत जैसा सह-आस्तित्व मूलक सम्बन्धी दूसरा उदाहरण सम्पूर्ण विश्व में कहीं और दुर्लभ है। वैदिक सनातन सभ्यता के सह उत्तराधिकारी एवं वृहद भारतवर्षीय संस्कृति के सहजीवी होने के कारण आधुनिक राज्य के रूप में नेपाल और भारत के बीच में सरकार व जनता दोनों स्तर पर सम्बन्धों में सहृदयता होना स्वाभाविक है। भारत-नेपाल अपने भू-राजनीतिक स्थिति के कारण सुरक्षा की दृष्टि से संधियों के माध्यम द्वारा परस्पर सैद्धान्तिक रूप से प्रतिबद्ध है। नेपाल और भारत की महान जनता, को जिन्होंने इतिहास के थपेड़ो और झंझावातो के बीच मानव मूल्यों की रक्षा की है, पुनः एशिया का दीपक के समान पथ प्रदर्शक बनकर दुनिया को राह दिखाने की आवश्यकता है। यदि भारत अब नही चेतता है तो उसे नेपाल से लगी अपनी लगभग 1750 किलोमीटर लम्बी सीमा पर गहरा रहे राजनैतिक एवं सामरिक संकटो से जूझने के लिए तैयार रहना होगा।

भारत और नेपाल के बीच केवल राजनीतिक सम्बन्ध नहीं है बल्कि मैत्री तथा सहयोग का प्राचीन काल से एक अनूठा रिश्ता है, जिसकी विशेषता के रूप में खुली सीमाएं,

◆◆◆